VOL- XI | ISSUE- VIII | AUGUST | 2024 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 8.02 | ISSN 2349-638x

विकासशील देशों में वैश्वीकरण की भूमिका व प्रभाव

सहायक आचार्य बनवारीलाल
M.A. Political science, RSLET
EX.- CH. K.R. GIRLS COLLEGE
NEW GHARSANA (SRI GANGANAGAR)

वैश्वीकरण करण का इतिहात

वैश्वीकरण की शुरुआत 20वीं सदी में नहीं हुई । यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो पिछले तीन शताब्दियों से अलग-अलग गति से और अलग-अलग तरीकों से हुई है। रोमन और ब्रिटिश साम्राज्यो सहित इतिहास के कई महान साम्राज्यों ने इस तरह की अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और संस्कृति बनाई जो कई मायनो में आधुनिक वैश्विककरण के अनुरूप थी । सड़कों और समुद्री मार्गों सहित विशाल व्यापारिक नेटवर्क का निर्माण , प्रारंभिक वैश्वीकरण की एक पहचान थी। प्राचीन साम्राज्यों में अपनी भाषाओं को अन्य लोगों पर फैलाया और प्रौद्योगिकी , धर्म और वस्तुओं को व्यापक क्षेत्र में फैलाने में मदद की। आधुनिक वैश्वीकरण के 20वीं शताब्दी के दौरान शुरू हुआ विशेष रूप से द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद। टेलीविजन के आविष्कार ने छवियों को लगभग तुरंत दुनिया भर में प्रसारित करने की अनुमति दी।

वैश्वीकरण: परिचय

वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण का अर्थ है पूरे विश्व में केंद्रीय व्यवस्था का होना। वैश्वीकरण विश्व में चारों ओर अर्थव्यवस्था का बढ़ता हुआ एकीकरण है। यह एकीकरण प्रमुख रूप से व्यापार तथा वित्तीय प्रभावों के माध्यम से होता है। घरेलू बाजार में जो बाजार शक्तियां क्रिया करती है उन्हें का राष्ट्रीय सीमाओं पर बाहर विस्तार की वैश्वीकरण है।

वैश्वीकरण क्या है ?

वैश्वीकरण शब्द का अर्थ राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण है बहुआयामी पहलू है यह कई रणनीतियों के संग्रह का परिणाम है जो दुनिया को अधिक परस्पर निर्भरता और एकीकरण की ओर बदलने के लिए निर्देशित है ।

इसमें सामाजिक आर्थिक और भौगोलिक बाधाओं को बदलने वाले नेटवर्क और प्रयासों का निर्माण शामिल है वैश्वीकरण इस तरह से संबंध बनाने की कोशिश करते हैं कि भारत में होने वाली घटनाओं का निर्धारण दूर-दूर तक होने वाली घटनाओं से किया जा सके।

दूसरे शब्दों में कहें तो वैश्वीकरण सार्वभौमिक रूप से लोगों निगमो और सरकारों के बीच बातचीत और एकता की विधि है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में वैश्वीकरण

शहरीकरण और वैश्वीकरण के बाद भारतीय समाज में भारी बदलाव आ रहे हैं। और आर्थिक नीतियों का अर्थव्यवस्था की बुनियादी ढांचे के निर्माण में सीधा प्रभाव पड़ा है

सरकार द्वारा स्थापित और प्रकाशित आर्थिक नीतियों ने समाज में बचत, रोजगार, आय और निवेश के स्तर की योजना बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

क्रॉस कंट्री कल्चर भारतीय समाज पर वैश्वीकरण के महत्वपूर्ण प्रभावों में से एक है। इसने देश के सांस्कृतिक, समाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सहित कई पहलुओं को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया है।

हालांकि आर्थिक एकीकरण वह मुख्य कारक हैं जो किसी देश की अर्थव्यवस्था को अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में बदलने बदलने में अधिकतम योगदान देता है।

वैश्वीकरण की विशेषताएं

- वैश्वीकरण की एक प्रमुख विशेषताएं हैं कि इसके अंतर्गत आर्थिक क्रियो का एक राष्ट्रीय सीमा से आगे विस्तार किया जाता है।
- वैश्वीकरण के अंतर्गत वस्तुओं सेवाओं पूंजी तकनीकी तथा श्रम संबंधी अंतरराष्ट्रीय बाजारों का

एकीकरण हो जाता है तथा इनकी आवागमन पर सभी प्रकार की रुकावट हटा ली जाती है।

- इसमें बहुराष्ट्रीय कंपनियों का विस्तार होता है।
- इससे वैश्वीकरण राष्ट्रों की राजनीतिक सीमाओं के आर पार आर्थिक लेनदेन की प्रक्रियाओं और उनके प्रबंधन का प्रवाह होता है।

वैश्वीकरण का ग्रामीण महिलाओं पर प्रभाव

भारतीय समाज विविधतायुक्त समाज है जिसमें बहुत से धर्म , जाति , भाषा , क्षेत्र रीति- रिवाज है वह परंपरा समिश्रण है। अन्य समाजों की तरह भारतीय समाज भी पितृसत्तात्मक समाज है जिसमें सांस्कृतिक व धार्मिक आधार पर तो स्त्रियां सम्मानित है तथा पूजनीय देवी स्वरूप भी हैं लेकिन व्यावहारिक धरातल पर महिलाओं की स्थिति दोयम दर्जे की रही है। भारतीय महिलाओं की सामाजिक संरचना में निर्धारित परस्थिति के कारण इनमें शिक्षा का अभाव सामाजिक आर्थिक भौतिक संपदाओं पर उनकी सहभागिता बहुत ही कम होती है। व ने केवल आर्थिक सामाजिक वाचनाओं की शिकार होती है वस्तुतः पूरा नारी समाज असमानता हुआ पिछड़ेपर का शिकर है। उनके साथ होने वाले लैंगिक भेदभाव के कारण उनकी हैसियत समाज में निम्र है।

वर्तमान में विश्व के विकसित और विकासशील देशों में ग्रामीण महिलाएं मुख्य भूमिका अदा कर रही है। भारत में उदारीकरण का दौर शुरू होने पर महिलाओं की स्थिति में तेजी से परिवर्तन देखने को मिला। देश में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के फैलाव ने बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार दिया जिनमें महिलाओं की संख्या भी उल्लेखनीय रही है। नई प्रौद्योगिकी और शिक्षा के प्रसार ने महिलाओं के प्रति समाज की सोच में बदलाव लाना शुरू किया उनकी सामाजिक स्थिति के साथ-साथ आर्थिक स्थिति भी मजबूत हुई। आज सरकार और उद्योग पूरे जोर से विदेशी पूंजी निवेश को आकर्षित करने में लगे है लेकिन उदारीकरण व ढांचागत समायोजन नीतियों के प्रभाव के अध्ययन के संदर्भ में हमें ध्यान रखना होगा कि भारत एक तीसरी दुनिया का देश है और काफी समय तक उपनिवेश रहा है ।

भारत सरकार की ओर से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए वर्तमान में कई कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जिनमें प्रमुख रूप से राष्ट्रीय महिला साक्षरता मिशन , राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार मिशन , राजीव गांधी किशोरी सशक्तीकरण योजना , जननी सुरक्षा योजना , महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना , शामिल है। इनके अलावा महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करने के लिए सरकार ने वर्ष 1990 में एक बड़ा कदम उठाया इस वर्ष सरकार ने राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना की जो महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा और उन्हें अपनी भूमिका के प्रति जागरूक करती है।

वैश्वीकरण के आर्थिक प्रभाव

- वैश्वीकरण ने पूंजीवाद के प्रसार, बाज़ारों पर निर्भरता बढ़ने, और उत्पादन रणनीतियों में बदलाव जैसी चीज़ों को जन्म दिया है ।
- वैश्वीकरण ने नए बाज़ारों, उन्नत व्यापार, और निवेश के लिए मार्ग प्रशस्त किया है।
- वैश्वीकरण ने सीमा पार प्रौद्योगिकी और ज्ञान हस्तांतरण को बढ़ावा दिया है ।
- वैश्वीकरण ने दुनिया भर में आर्थिक विकास, बेहतर उत्पादकता, और रोज़गार सृजन में योगदान दिया है ।
- वैश्वीकरण ने युवाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने और अधिक प्रतिस्पर्धी बनने के लिए प्रोत्साहन दिया है ।
- वैश्वीकरण ने वैश्विक असमानता को बढ़ाया है. इससे अकुशल श्रमिकों को कम वेतन का सामना करना पड़ता है और उनकी आजीविका लगातार खतरे में रहती है ।
- वैश्वीकरण ने दुनिया भर की विभिन्न संस्कृतियों के एकीकरण पर प्रभाव डाला है ।
- वैश्वीकरण ने विकासशील देशों में बढ़ती असमानता, संस्थागत अक्षमता, और कभी-कभी हिंसा को जन्म दिया है ।

वैश्वीकरण की चुनौतियां

- विदेशी कंपनियों का डाटा गोपनीयता , स्थानीयकरण और डिजिटल कराधान जैसे कानून से जुड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है ।
- वैश्वीकरण की चुनौतियां ने गरीबों को और गरीब और अमीरों को और अधिक अमीर बना दिया है।

- वैश्वीकरण से पर्यावरणीय ह्रास प्रदूषण जैव विविधता और निवास स्थान को भी हानि पहुंची है।
- वर्तमान में वैश्वीकरण की चुनौतियों के लिए विश्वविद्यालय की निजीकरण और जाति आधारित कोटे की वजह से गरीबों को उच्च शिक्षा के अवसरों से वंचित किया जा रहा है।
- नई तकनीक के आने से जरूरी श्रम की मात्रा में कमी आई है जिससे भारतीय उद्योगों में बेरोजगारी की दर दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है ।
- वर्तमान समय में वैश्वीकरण की वजह से भारत में साइबर हमलों की संख्या भी बढ़ती जा रही है ।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के गुण दोषो पर निष्पक्ष विचार करके इसका संतुलित मूल्यांकन किया जाना चाहिए वैश्वीकरण के आलोचक यह तर्क देते हैं कि वैश्वीकरण ने निर्धनता को मिटाया नहीं है बल्कि उसे कायम रखा है इसने आर्थिक विषमताओं को बढ़ाया है पर्यावरण को प्रदूषित किया है इसने आर्थिक विषमताओं को बढ़ावा दिया है सैन्यवाद को सहारा दिया है ।समुदायों को विखंडित किया है .और उपाश्रित समुदायों की दशा पहले से भी दयनीय बना दी है दूसरी और वह यह भी स्वीक । स्वीकार करते हैं कि

वैश्वीकरण के कारण 1945 के बाद विश्व की प्रति व्यक्ति आय तिगुनी हो गई है विश्व की जनसंख्या में अति निर्धन लोगों का अनुपात आधा रह गया है पर्यावरण के प्रति सजगता बढी है और निशस्त्रीकरण के लिए अनुकूल वातावरण बना है । इससे विकासशील देशों के युवा वर्ग को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए नई प्रेरणा मिली है बल्कि उपयुक्त अवसर भी मिले हैं फिर इसेउपाश्रित वर्गों को अपने वैश्वीकरण संगठन बनाने की प्रेरणा मिली है और यह यह अनुमान करने लगे हैं कि वे वैश्वीकरण प्रणाली को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं इन वर्गों में अपने आप को वैश्वीकरण संस्कृति के साथ जोड़कर अपनी नई पहचान बनाई है जिससे उन्हें स्थानीय शक्तियों केप्रभुत्व से कुछ अलग मुक्ति मिली है।

आज पूरी दुनिया तेज गति से बदल रही हैइसलिए परिवर्तन को शंका की दृष्टि से देखना गलत है नहीं तो अलग-अलग पड़ जाओगे इस संदर्भ में थियोडोर लेविट ने लिखा है कि " हमें वैश्वीय तरीके से सोचना चाहिए और हमारे काम करने के तरीके स्थानीय होने चहिए।"

संदर्भ सूची

1. अभय कुमार दुबे भारत का वैश्वीकरण: 2020
2. एनसीईआरटी राजनीति विज्ञान पुस्तक
3. पुष्पेश पंत भूमंडलीकरण एवं भारत ऐसेस पब्लिशिंग 2018

ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com